BISHOP SCOTT BOYS' SCHOOL

(Affiliated to CBSE, New Delhi) Affiliation No.: 330726, School Campus: Chainpur, Jaganpura, By-Pass, Patna 804453.
Phone Number: 7061717782, 9798903550. ,
Web: www.bishopscottboysschool.com Email: info@bishopscottboysschool.com

STUDY COURSE MATERIAL HINDI

SESSION-2020-21

CLASS- ८

TOPIC-पाठ २ . वर्ण विचार

DAY-1

❖ **TEACHING MATERIAL :-**

उच्चारण स्थान के आधार पर व्यंजनों के भेद :--

१ओष्ठय (प, फ, ब , भ, म)
२ दंत्योष्ठय (व, फ)
३दंत्य (त, थ, द, ध)
४.वत्सर्य (न, र, ल, स, ज)
५.तालव्य (च, छ, ज, झ,)
६.मूर्धा (ट, ठ, ड ,ढ, ण, ड़,)
७. कोमल तालव्य (क, ख, ग, घ, ड.)
८. स्वरतंत्रीय(ह)

प्रयत्न के संधर्ष पर व्यंजनों के भेद:--

१.स्पर्शी (क, ख, ग, घ, ट ,ठ, त, थ द, प, फ, ब, भ)
२. संघर्षी(स, श, ष, ह, ज, फ)
३. स्पर्श - संघषी (च, छ, ज, झ)
४.नासिक्य (ड. , ण, न, म,)
५.पार्शिर्वक (ल)
६.उत्क्षिप्त (ड़, ढ़)
७. प्रकंपित(र,)
८. अर्धस्वर (य, व)

DAY-2-3

२वास की मात्रा के आधार पर व्यंजनों के भेद:-

१.अल्पप्राण__स्पर्श व्यंजनों में प्रत्येक वर्ग का १,३ और ५ वर्ण तथा य, र, ल, व आता है।
२.महाप्राण--स्पर्श व्यंजनों में से प्रत्येक वर्ग का २ , ४तथा श ,ष ,स , ह आता है।

स्वरतंत्रियों के कंपन के आधार पर व्यंजनों के भेद ----

१.संघोष व्यंजन -स्पर्श व्यंजनों के वर्गों का ३ , ४ , ५ तथा व और ह आता है।
२.अघोष व्यंजन -स्पर्श व्यंजनों में से प्रत्येक वर्ग का १,२ और श, ष , स आता है।

व्यंजनों का मेल--

१.व्यंजन संयोग- स्वर रहित व्यंजन को व्यंजन से जोड़ने को व्यंजन संयोग कहते हैं

२.व्यंजन गुच्छ- एक से अधिक व्यंजन जब कम दूरी के साथ सटकर बैठे हों, तो उसे व्यंजन गुच्छ कहा जाता है।

जैसे- व्यंजन , गुच्छ

३.द्वित्व व्यंजन - पक्का, सच्चा,

४.सन्युक्त।क्षर-- भक्त, प्यास

वर्ण -विच्छेद

किसी शब्द में प्रयुक्त प्रत्येक वर्ण को पृथक करना वर्ण - विच्छेद कहलाता है।

वर्तनी;-----

वर्तनी वर्णों एवं शब्दों के लिखने की विधि है। वर्तनी भाषा के उच्चारित रूप के अनुसार चलती है।

हिन्दी भाषा में वर्ण जिस प्रकर बोला जाता है, उसी प्रकार लिखा जाता है।

मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ

१.ह्रस्व मात्रा के स्थान पर दीर्घ मात्रा लगाना-----

अशुद्ध- कवी , साधू

शुध्द ---कवि , साधु

२.दीर्घ मात्रा के स्थान पर ह्रस्व मात्रा लगाना----

अशुद्ध - श्रीमति, निरस

शुध्द -- श्रीमती, नीरस

३.व्यंजन संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध -- रामायन, पुन्य

शुद्ध -- रामायण, पुण्य

४.अनुस्वार और अनुनासिक संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध --महंगा, कांच

शुद्ध -- महँगा, काँच

५ऋ, र संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध --कांच, कँगन

शुद्ध -- काँच, कंगन

६.संयुक्त।क्षर संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध- उपलक्ष

शुद्ध--- उपलक्ष्य

DAY-4-5

❖ अभ्यास:-

प्रश्न १. ह्रस्व स्वरों को ह्रस्व और दीर्घ स्वरों को दीर्घ क्यों कहे हैं?

1उत्तर -- ह्रस्व स्वर - (अ, इ, उ, ऋ) -- इनके उच्चारण में अपेक्षाकृत काम समय लगता है। ये मूल स्वर हैं

दीर्घ स्वर - (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ) -- इनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में लगभग दुगना समय लगता है।

2.सघोष और अघोष को उदाहरण के साथ समझाएँ।

सघोष व्यंजन -- जिन वर्णों को बोलते समय स्वरतंत्रियों से वायु का घर्षण होता है, सघोष व्यंजन कहलाते हैं। स्पर्श व्यंजनों के वर्गों का ३,४,५ वर्ण तथा ह आता है।
अघोष व्यंजन -- जिन वर्णों के उच्चारणमें स्वरतंत्रियाँ दूर - दूर रहती हैं, वे अघोष व्यंजन कहलाते हैं।
स्पर्श व्यंजनों में से प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा वर्ण तथा श ,ष और स आता है।